

अध्यात्म



संजीवनी

भक्तिमय भजन संग्रह



अध्यात्म



संजीवनी

भक्तिमय भजन संग्रह

प्राचीन कवियों व ज्ञानियों द्वारा विरचित
आध्यात्मिक भक्ति गीतों व स्तुतियों का
अनुपम संकलन

: प्रकाशक :

श्री कुन्दकुन्द-कहान पारमार्थिक ट्रस्ट
मुम्बई

प्रथम संस्करण :

परम पूज्य सद्गुरुदेवश्री कानजी स्वामी के १३३वीं जन्म जयंती
के पावन अवसर पर प्रकाशित, वैशाख सुद २

२ मई २०२२ -

मुमुक्षुता की प्रगटता व भावना ही इस पुस्तक का मूल्य है।

अध्यात्म संजीवनी में समाहित गीत सभी प्रमुख

AUDIO APP - Gaana, JioSaavan, Amazon Music, Spotify, Apple Music, Hungama, Google Music, Wynk Music, Youtube Music
आदि पर निःशुल्क उपलब्ध है।

प्राप्ति स्थान :

श्री कुन्दकुन्द-कहान पारमार्थिक ट्रस्ट

302, कृष्णकुंज, प्लॉट नं. 30, नवयुग सीएचएस लि.

वी.एल.मेहता मार्ग, विले पार्ले (पश्चिम), मुम्बई 400056

website : www.vitragvani.com, **e-mail:** info@vitragvani.com

श्री दिगम्बर जैन स्वाध्याय मंदिर ट्रस्ट

सोनगढ़ (सौराष्ट्र) 364250, फोन : 02846 244334, 244358

website : www.kanjiswami.org, **e-mail :** contact@kanjiswami.org

तीर्थधाम मंगलायतन

अलीगढ़-सासनी मार्ग, सासनी-204216 (हाथरस), उत्तरप्रदेश

मोबा. 9997996346, 9756633800

Website : www.mangalayatan.com; **e-mail :** info@mangalayatan.com

पंडित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट

ए-4, बापू नगर, जयपुर - 302015

फोन. 0141 2707458, 2705581

Website : www.ptst.in, **e-mail :** info@ptst.in

अहो भाव

वीतरागी देव-शास्त्र-गुरु इस पवित्र जैन शासन के मूल आधार हैं। धर्मी श्रावकों को इनके प्रति सहज ही परम उत्कृष्ट अहोभाव आता है। जिनधर्म के प्रति अपूर्व भावना से प्रेरित होकर हजारों वर्षों से प्राकृत, संस्कृत और वर्तमान में हिन्दी तथा अन्य प्रचलित देशीय भाषाओं में अनेक ज्ञानियों व आत्मार्थी कवियों ने आध्यात्मिक भक्ति साहित्य की रचना की है। इन कवि रत्नों में कविवर दौलतरामजी, श्री भूधरदासजी, श्री भागचन्दजी, श्री बुधजनजी, श्री चानतरायजी आदि द्वारा प्रसूत ये सभी भक्तियाँ भेदविज्ञान, वीतरागता व वैराग्य रस से सराबोर हैं। इन्हीं कवियों के भक्ति उपवन में से कुछ उत्कृष्ट भक्ति पुष्पों का संकलन यहाँ **अध्यात्म संजीवनी** के रूप में निबद्ध कर प्रस्तुत किया जा रहा है; अतः सर्वप्रथम हम उन सभी ज्ञानी कवियों के प्रति अपनी श्रद्धा सुमन समर्पित करते हैं।

प्रस्तुत अध्यात्म संजीवनी में ख्यातिप्राप्त संगीतकार एवं गायक श्री आसित देसाई, आलाप देसाई तथा सुरेश जोशी द्वारा संगीत की मधुर लहरियाँ तथा देश के कई प्रसिद्ध गायक कलाकारों द्वारा स्वर लहरियाँ प्रदान की गई हैं; अतः हम उन सभी कलाकारों व सहयोगियों के प्रति भी अपना हार्दिक आभार व्यक्त करते हैं।

इन आध्यात्मिक पदों को आत्मार्थी भव्य जीवों की आत्मरूचि पुष्ट करने, चिरकाल तक सुरक्षित रखने एवं आगामी पीढ़ी तक पहुँचाने की पवित्र भावना से ही **श्री कुन्दकुन्द-कहान पारमार्थिक ट्रस्ट, मुम्बई** के द्वारा यह प्रयास किया गया है। आशा है कि आत्मार्थीजन इस अध्यात्म भक्ति रूपी अमृत का रसपान कर ज्ञान और वैराग्य की प्रेरणा लेंगे तथा इन भक्ति गीतों में समाहित भावों को समझकर निज स्वाध्याय में वृद्धि करेंगे।

- श्री कुन्दकुन्द-कहान पारमार्थिक ट्रस्ट, विले पार्ले, मुम्बई

अनुक्रमणिका

एलबम-5 अध्यात्म संजीवनी (भाग-5)

पेज नं.

१.	दिन-रात स्वामी तेरे गीत.....	-	०१
२.	हो जिनवाणी जु.....	पं.बुधजनजी	०३
३.	परम गुरु बरसत ज्ञान झरी.....	पं.द्यानतरायजी	०५
४.	जीव तैं मोधपना कित पायो.....	पं.द्यानतरायजी	०७
५.	चेतन तैं यौं ही भ्रम ठान्यो.....	पं.दौलतरामजी	०९
६.	या नित चितवो उठि के भोर.....	पं.बुधजनजी	११
७.	री मेरे घट ज्ञान घनागम.....	पं.द्यानतरायजी	१३
८.	मोहि कब ऐसा दिन आय हैं.....	पं.द्यानतरायजी	१५
९.	ज्ञानी जीवनि के भय.....	पं.भागचंदजी	१७
१०.	कर!कर! आतम हित रे प्राणी.....	पं.द्यानतरायजी	१९

अध्यात्म संजीवनी

भाग - ५

1

दिन-रात स्वामी तेरे गीत गाऊँ...

दिन - रात स्वामी तेरे गीत गाऊँ
 भावों की कलियाँ चरणे खिलाऊँ ॥टेक॥
 तेरी शान्त-मूरत मुझे भा गई है।
 मेरे नयनों में नजर आ गई है।
 मैं अपने में अपने को कैसे समाऊँ,
 भावों की कलियाँ चरणे खिलाऊँ ॥१॥
 मैं सारे जहाँ में कहीं सुख न पाया।
 है गम का भरा गहरा दरिया है छाया।
 ये जीवन की नैया मैं कैसे तिराऊँ,
 भावों की कलियाँ चरणे खिलाऊँ ॥२॥
 यही आस जिनवर-शरण पाऊँ तेरी,
 मिट जाये मेरी ये भव-भव की फेरी।
 शरण दो, तुम्हें नाथ शीश नवाऊँ,
 भावों की कलियाँ चरणे खिलाऊँ ॥३॥
 तेरी सौम्य मुद्रा हे त्रिभुवन मे अनुपम,
 तेरी वीतरागी परिणति हे अद्भुत।
 मैं तुझको ही पूजू मैं तुझको ही ध्याऊँ,
 भावों की कलियाँ चरणे खिलाऊँ ॥४॥



हे जिनेन्द्र भगवान! अब मैं प्रतिसमय आपके ही गुणगान करता हूँ और अपने भक्ति रुपी भावों के पुष्प आपके चरणों में समर्पित करता हूँ ॥टेक॥

हे प्रभो! मुझे आपकी शान्त मुद्रा अच्छी लगती है और मेरी आँखों को आपकी यह वीतरागी मुद्रा सुहाती है। हे प्रभो! कृपया बतायें कि मैं अपने आत्मा में किस तरह रमण कर सकता हूँ अर्थात् आत्मानुभूति कैसे करूँ? ॥१॥

हे स्वामी! मैंने चारों गति में कहीं भी सुख प्राप्त नहीं किया। चारों ओर संसार में दुखों का सागर ही दिखाई पडता है। मैं अपने जीवन की नाव को इस संसार सागर से कैसे पार लगाऊँ? ॥२॥

हे जिनवर! अब मेरी एक ही भावना है कि मैं आपकी शरण को प्राप्त करूँ, जिससे मेरा संसार में आवागमन रुक जायें। हे नाथ! आप मुझे अपनी शरण में ले लो, मैं आपको नमस्कार करता हूँ और अपने भक्ति रुपी भावों के पुष्प आपके चरणों में समर्पित करता हूँ ॥३॥

हे भगवान! आपकी सौम्य मुद्रा तीनों ही लोकों में अनुपम है, आपकी वीतरागी परिणति (दशा) अद्भुत है। आपके निस्पृह स्वभाव के भान से मैं अब आप ही की पूजा-वंदना करता हूँ, आप ही के द्रव्य-गुणों का ध्यान करता हूँ। हे वीतरागी देव! आपके चरणों में ही मेरे भाव समर्पित हो जाये ॥४॥



2

हो जिनवाणी जू....

हो जिनवाणी जू, तुम मोकों तारोगी॥
 आदि अन्त अविरुद्ध वचन तें, संशय भ्रम निरवारोगी॥
 जिनवाणी माता, तुम मोकों तारोगी...
 ज्यों प्रतिपालित गाय वत्स कौ, त्यों ही मुझको पालोगी॥
 जिनवाणी माता, तुम मोकों तारोगी...
 सन्मुख काल बाघ जब आवै, तब तत्काल उबारोगी॥
 जिनवाणी माता, तुम मोकों तारोगी...
 'बुधजन' दास विनवै माता, या विनती उर धारोगी॥
 जिनवाणी माता, तुम मोकों तारोगी...
 उलझी रह्यो हूँ मोह जाल में, ताकों तुम सुरझारोगी॥
 जिनवाणी माता, तुम मोकों तारोगी...



हे जिनवाणी माता! आप ही मुझको इस संसार चक्र से पार कराने वाली हो।।टेक।।

आपके वचन प्रारम्भ से लेकर अंत तक परस्पर विरोध से रहित है, एवं आप ही मेरा संशय और भ्रम का निवारण करने वाली हो।।१।।

जिस प्रकार गाय अपने बछड़े का प्रेमपूर्वक पालन करती है उसी प्रकार आप मेरा पालन पोषण करोगी अर्थात् मुझे राग-द्वेष आदि विकारी भावों से बचाकर सुख का मार्ग बताओगी।।२।।

जब काल रूपी बाघ मेरे सामने आयेगा अर्थात् जब मृत्यु का समय आयेगा तो आप ही उसके भय से मुझे निर्भय करोगी।।३।।

कवि बुधजनजी कहते हैं कि हे जिनवाणी माता! मेरी यही विनय है कि मेरा निवेदन स्वीकार करो।।४।।

मैं मोह रूपी जाल में फंस गया हूँ इसलिये अब आप ही मुझे इस जाल से मुक्त करोगी अर्थात् मुझे कर्म रूपी शत्रुओं से मुक्त करोगी।।५।।

हे जिनवाणी माता! तुम ही संसार सागर से मुझे पार करोगी।



3

परम गुरु बरसत ज्ञान झरी...

परम गुरु बरसत ज्ञान झरी...

हरषि हरषि बहु गरजि गरजि के, मिथ्या तपन हरी॥

परम गुरु बरसत ज्ञान झरी...

सरधा भूमि सुहावनि लागे, संशय बेल हरी।

भविजन मन सरवर भरि उमड़े, समुद्धि पवन सियरी॥

परम गुरु बरसत ज्ञान झरी...

स्याद्वाद नय बिजली चमके, परमत शिखर परी।

चातक मोर साधु श्रावक के, हृदय सुभक्ति भरी॥

परम गुरु बरसत ज्ञान झरी...

जप तप परमानन्द बढ्यो है सुखमय नींव धरी।

‘द्यानत’ पावन पावस आयो, थिरता शुद्ध करी॥

परम गुरु बरसत ज्ञान झरी...



बारिश के मौसम में जंगल में आत्मध्यान में लीन वीतरागी दिगम्बर मुनिराज के स्वरूप से मानो ज्ञान की धारा प्रवाहित हो रही है। ऐसा लग रहा है कि मुनिराज अपने स्वरूप में लीन होकर अत्यंत आनंद का अनुभव कर रहे हैं जिससे मिथ्यात्व रूपी तपन का नाश हो रहा है॥१॥

हे जीव! ऐसा प्रतीत हो रहा है कि सम्यक दर्शन रूपी भूमि अत्यंत मनोहारी है, जिसने सशंय रूपी मिथ्यात्व की बेल का नाश कर दिया है तथा मुनिराज की मंगल वाणी से निकली भेदविज्ञान रूपी वायु से भव्य जीवों के सरोवर रूपी मन में आनंद उमड़ रहा है॥२॥

हे भव्य! मुनिराज की वाणी में आये स्याद्वादरूपी बिजली की चमक से मानो मिथ्यामत पर्वत से गिरकर नष्ट हो गया है और जिस प्रकार वर्षा ऋतु के आ जाने से मयूर आदि जीव प्रसन्नता से नृत्य करने लगते हैं, उसी प्रकार वीतरागी दिगम्बर सन्तों को देखकर भव्य जीवों के चित्त में अगाध भक्ति भर जाती है॥३॥

मुनिराज की आत्म स्थिरता और तप से उनका आत्मिक आनंद बढ़ गया है और यह आनंद ही सुखमय नींव के समान लग रहा है। कवि दानतरायजी कहते हैं कि सावन के माह में आनंदरूपी बारिश हो रही है और यह आनंद ही आत्मस्थिरता का शाश्वत कारण है॥४॥



4

जीव! तैं मूढपना कित पायो ...

जीव! तैं मूढपना कित पायो ...

सब जग स्वारथको चाहत है,

स्वारथ तोहि न भायो॥जीव॥

अशुचि अचेत दुष्ट तनमांही,

कहा जान विरमायो।

परम अतिन्द्री निजसुख हरिकै,

विषय रोग लपटायो॥ जीव॥१॥

चेतन नाम भयो जड़ काहे,

अपनो नाम गमायो।

तीन लोक को राज छांडिके,

भीख मांग न लजायो॥ जीव॥२॥

मूढपना मिथ्या जब छूटै,

तब तू संत कहायो।

‘द्यानत’ सुख अनन्त शिव विलसो,

यों सद्गुरु बतलायो॥ जीव॥३॥



हे जीव! तुम अज्ञानी क्यों हो रहे हो?, सारा जगत अपने स्वार्थ से ही तुमसे स्नेह करता है। तुम्हें अपना आत्मा का सुख क्यों नहीं सुहाता?।।टेक।।

हे जीव! इस अपवित्र और अचेतन शत्रु के समान शरीर में क्यों रमण कर रहे हो? तुम अपने परम अतीन्द्रिय आत्मसुख को भूलकर क्यों विषय भोगों में लीन हो रहे हो?।।१।।

हे प्राणी! तुम्हारा नाम चेतन है तो भी तुम क्यों अचेतन की तरह होकर अपने चेतन नाम के मान को खो रहे हो, तुम तीन लोक के सम्राट सिद्ध स्वरूपी राज्य पद को छोड़कर विषयों से सुख की भीख क्यों मांग रहे हो?।।२।।

द्यानतरायजी कहते हैं कि जब तुम मिथ्यात्व के दोष को छोड़ दोगे तभी जगत में पूज्यनीय होंगे और मोक्ष का अनन्त सुख प्राप्त कर पाओगे। इस प्रकार का मार्ग सद्गुरु अर्थात् दिगम्बर मुनिराज ने बताया है।।३।।



5

चेतन तैं यौं ही भ्रम ठान्यो...

चेतन तैं यौं ही भ्रम ठान्यो,
 ज्यौं मृग मृगतृष्णा जल जान्यो।
 ज्यौं निशितममें निरख जेवरी,
 भुजंग मान नर भय उर आन्यो॥
 ज्यौं कुध्यान वश महिष मान निज,
 फंसि नर उरमाहीं अकुलान्यौ।
 त्यों चिर मोह अविद्या पेरयो,
 तेरौ तै ही रूप भुलान्यो॥१॥
 तोय तेल ज्यौं मेल न तनको,
 उपज खपज मैं सुखदुख मान्यो।
 पुनि परभावनको करता ह्वै,
 तैं तिनको निज कर्म पिछान्यो॥२॥
 नरभव सुथल सुकुल जिनवानी,
 काललब्धि बल योग मिलान्यो।
 'दौल' सहज भज उदासीनता,
 तोष-रोष दुखकोष जु भान्यो॥३॥



हे चेतन! तुम व्यर्थ ही भ्रम में पड़े हुये हो। जिस प्रकार मृगतृष्णा को जल समझकर मृग दुखी होता है एवं रात्रि के अंधकार में रस्सी को सर्प समझकर कोई मनुष्य दुखी होता है।।टेक।।

विपरीत ध्यान के द्वारा स्वयं को भैंसा मानकर व अपने को कहीं फंसा हुआ समझकर कोई मानव बहुत आकुलित होता है उसीप्रकार तुम स्वयं अपना स्वरूप भूलकर दुःखी होते हो।।१।।

हे चेतन! शरीर का संयोग तो जल में तेल की भांति है अर्थात् शरीर तुमसे अत्यंत पृथक् रूप होने पर भी तुम उसके जन्म-मरण से स्वयं को बहुत दुःखी मान रहे हो तथा परभावों का कर्ता बनकर अपने नवीन कर्म को बांध रहे हो।।२।।

कविवर पण्डित दौलतरामजी कहते हैं कि हे चेतन! अब तुम्हें काललब्धि के बल से मनुष्य भव, उत्तम कुल और जिनवाणी का उत्तम योग प्राप्त हुआ है अतः अब तुम सहज उदासीनता का सेवन करो और जो दुःख के भण्डार हैं ऐसे राग-द्वेष को नष्ट करो।।३।।



6

या नित चितवो उठ के भोर...

या नित चितवो उठ के भोर।।

मैं हूँ कौन, कहाँ ते आयो, कौन हमारी ठौर।।

या नित चितवो उठ के भोर।।

दीसत कौन कौन यह चितवत, कौन करत है शोर।

ईश्वर कौन, कौन है सेवक, कौन करै झकझोर।।

या नित चितवो उठ के भोर।।

उपजत कौन, मरै को भाई, कौन डरे (करे) लखि घोर।

गया नहीं आवत कछु नाही परिपूरन सब ओर षष

या नित चितवो उठ के भोर।।

और, और मैं, और रूप ह्वै परिणति करि लई और।

स्वाँग धरै डोलौ याही तें तेरी 'बुधजन' भोर।।

या नित चितवो उठ के भोर।।

मैं हूँ कौन, कहाँ ते आयो, कौन हमारी ठौर।।

या नित चितवो उठ के भोर।।



हे जीव! प्रतिदिन प्रातःकाल उठकर इस प्रकार का चिंतन करो कि मैं कौन हूँ, कहाँ से आया हूँ और मेरा जीवन का लक्ष्य क्या है?।।टेक।।

हे जीव! यह विचार करो कि मेरा आतमा किसको विषय बनाता है, यह चेतन कौन है, यह शब्द कहां से आ रहे हैं, यह ईश्वर कौन है और भक्त कौन है एवं कौन मुझे आश्चर्यचकित करता है?।।१।।

हे जीव! प्रतिदिन विचार करो कि कौन जन्म लेता है कौन मरण को प्राप्त करता है, और कौन दृश्य देखकर डरता है? मेरे स्वरूप मे न तो कुछ घटता और न ही कुछ बढ़ता है मैं तो स्वयं हर दृष्टि से परिपूर्ण हूँ।।२।।

बुधजन कवि कहते हैं कि हे जीव! प्रतिदिन विचारो कि यह शरीर, रूप और इसका परिणामन मेरा स्वरूप नहीं है और शरीर तो वेश मात्र है, इस तरह का ज्ञान प्रगट होना ही जीवन का सुप्रभात है।।३।।



7

री! मेरे घट ज्ञान घनागम छायो...

री! मेरे घट ज्ञान घनागम छायो.....

शुद्ध भाव बादल मिल आये, सूरज मोह छिपायो।।री.।।

अनहद घोर घोर गरजत हैं, भ्रम आताप मिटायो।

समता चपला चमकनि लागी,

अनुभौ-सुख झर लायो।।री.।।१।।

सत्ता भूमि बीज समकितको, शिवपद खेत उपायो।

उद्धत भाव सरोवर दीसै, मोर सु न हरषायो।।री.।।२।।

भव-प्रदेशतैं बहु दिन पीछैं, चेतन पिय घर आयो।

‘द्यानत’ सुति कहै सखियनसों,

यह पावस मोहि भायो।।री.।।३।।



हे सखी! मेरे हृदय में ज्ञान रूपी घन छा गया है। ऐसा लग रहा है कि मानो शुद्धभाव के बादल छा गये हैं और इस कारण से मोहरूपी सूर्य दिखाई नहीं दे रहा है।।टेक।।

शुद्धभाव रूपी बादलों की घनघोर गर्जना से मिथ्या भ्रम की तपन समाप्त हो गई है। ऐसा प्रतीत होता है कि समता रूपी बिजली चमक रही है और आत्म अनुभव के सुख की बारिश हो रही है।।१।।

श्रद्धा की भूमि पर सम्यक्त्व रूपी की बीज के द्वारा मोक्ष महल प्राप्त होने वाला है। आतमा के पवित्र परिणामों का सरोवर देखकर मानो मन रूपी मोर हर्षित हो रहा है।।२।।

कविवर दानतरायजी कहते हैं कि आत्मपरिणाम अपने सहेली से कहती है कि हे सखी! प्रिये जीव संसार के भाव को छोडकर अब अपने घर आ गया है।यह बारिश का माह मुझे बहुत सुहा रहा है।।३।।



8

मोहि कब ऐसा दिन आय है...

मोहि कब ऐसा दिन आय है॥

सकल विभाव अभाव होहिंगे, विकलपता मिट जाय॥

मोहि कब ऐसा दिन आय है॥

यह परमात्म, यह मम आत्म, भेद बुद्धि न रहाय।

औरनि की का बात चलावै, भेद विज्ञान पलाय॥

मोहि कब ऐसा दिन आय है॥

जानैं, आप आप मैं आपो, सो व्यवहार बिलाय।

नय प्रमाण निक्षेपन मांहीं, एक न अवसर पाय॥

मोहि कब ऐसा दिन आय है॥

दर्शन ज्ञान चरण के विकल्प, कहो कहां ठहराय।

द्यानत चेतन चेतन ह्वै है, पुद्गल पुद्गल थाय॥

मोहि कब ऐसा दिन आय है॥



हे प्रभु! मेरा ऐसा दिन कब आयेगा, जब सम्पूर्ण विभावों का अभाव होगा और सारे विकल्प मिट जायेंगे।।टेक।।

अज्ञानी जीव को ये परमात्मा और ये मेरा आत्मा – ऐसी भेदबुद्धि नहीं रहती। औरों की तो क्या बात करें – यहाँ तो भेदविज्ञान का विकल्प भी नहीं रहता है।।१।।

हे प्रभु! अपने आप को आत्मस्वरूप जानने पर व्यवहार सापेक्ष बुद्धि नष्ट हो जाती है। तब नय-प्रमाण-निक्षेपों के बीच रहकर एक भी अवसर नहीं पाता अर्थात् इन सभी को जानने का विकल्प उत्पन्न नहीं होता है।।२।।

कविवर दयानतराय जी कहते हैं कि जब चेतन चेतन में और पुद्गल पुद्गलमय हो जाता है तब दर्शन, ज्ञान, चरित्र के विकल्प भी कहाँ ठहरेंगे? अर्थात् उन्हें जानने की बुद्धि भी नहीं रहती है।।३।।



9

ज्ञानी जीवनि के भय...

ज्ञानी जीवनि के भय, होय न, या परकार।।

इह भव, परभव, अन्य, न मेरो, ज्ञानलोक मम सार।
मैं वेदक इक ज्ञान भाव को, नहीं पर वेदन हार।।

ज्ञानी जीवनि के भय.....

निज स्वभाव को नाश न तातैं, चहिये नहि रखवार।
परम गुप्त, निज रूप सहज ही, पर का तहँ न संचार।।

ज्ञानी जीवनि के भय

चित् स्वभाव निज प्राण तास को, कोई नहीं हरतार।
मैं चित् पिण्ड, अखण्ड, न तातैं, अकस्मात भय भार।।

ज्ञानी जीवनि के भय

होय निशंक स्वरूप अनुभवैं, जिनके यह निर्धार ।

मैं सो मैं, पर सों मैं नहीं, 'भागचन्द' भ्रम डार ।।

ज्ञानी जीवनि के भय, होय न, या परकार।



ज्ञानी जीव को किसी भी प्रकार का भय नहीं होता।।
टेक।।

ज्ञानी जीव विचार करता है कि यह लोक या पर
लोक आदि कोई भी लोक मेरा नहीं है, मेरे लिये तो एक मात्र
ज्ञान लोक ही सारभूत है। मैं तो एक मात्र ज्ञान लोक ही सारभूत
है। मैं तो एक मात्र ज्ञान भाव का वेदक हूँ, मैं पर का वेदन नहीं
करता।।१।।

मेरे आत्मस्वरूप का कभी नाश नहीं हो सकता
इसलिये मुझे किसी की सुरक्षा की आवश्यकता नहीं है। मैं
अपनी मर्यादा में रहने वाला, सहज स्वरूपमयी हूँ और मेरे
स्वरूप में पर का प्रवेश नहीं है।।२।।

मैं चेतन स्वभाव वाला हूँ और मेरे प्राणों का हरण
कोई नहीं कर सकता। मैं चेतना का पिण्ड, अखण्ड हूँ
इसलिये मैं अकस्मात् भय से रहित हूँ।।३।।

कविवर भागचन्दजी कहते हैं कि जिनको आत्म
स्वरूप का निश्चय हो जाता है वे जीव अपने स्वरूप को निशंक
अनुभव करते हैं। वे भ्रम का नाशकर विचार करते हैं कि मैं पर
से भिन्न आत्म स्वरूपमयी हूँ।।४।।



10

कर! कर! आतम हित रे प्राणी...

कर! कर! आतम हित रे प्राणी॥

जिन परिणामनि बंध होत है, सो परिणति तज दुखदानी॥

कर! कर! आतम हित रे प्राणी॥

कौन पुरुष तुम कहाँ रहत हो, किहि की संगति रति मानी॥

जे पर्याय प्रगट पुद्गल मय, ते तैं क्यों अपनी जानी॥

कर! कर! आतम हित रे प्राणी॥

चेतन ज्योति झलकत तुझ मांहीं, अनुपम, सो तैं बिसरानी॥

जाकी पटतर लगत आन नहिं, दीप, रतन, शशि, सूरानी॥

कर! कर! आतम हित रे प्राणी॥

आप में आप लखो अपनो पद, 'द्यानत' करि तन मन वाणी॥

परमेश्वर पद आप पाइये, यों भाषैं केवलज्ञानी॥

कर! कर! आतम हित रे प्राणी॥



हे प्राणी! अपना आत्म हित करो और जिन परिणामों से बंध होता है उन दुःखदायी परिणामों का त्याग करो।।टेक।।

हे चेतन! तुम कहाँ निवास करते हो और किनकी संगति में आनंद मान रहे हो। जो प्रत्यक्ष रूप पुद्गल की पर्याय है उसको तुम क्यों अपना मानते हो। इसलिये हे प्राणी अपना आत्म हित करो।।१।।

तुम्हारी चैतन्य ज्योति तुम्हारे में ही दिखाई दे रही है उसे तुम भूल गये हो। जिस चैतन्य ज्योति के सामने दीपक, रत्न, सूर्य और चंद्रमा की ज्योति भी फीकी है। हे प्राणी! अपनी आत्मा का हित करो।।२।।

कविवर श्री ध्यानतरायजी कहते हैं कि यदि तुम अपने सम्पूर्ण मन-वचन-काय के उपयोग से अपनी आत्मा में आपरूप का श्रद्धान करोगे तो परमात्मा बन जाओगे - ऐसा केवलज्ञानी परमात्मा की वाणी में आया है।।३।।



ADHYATAM SANJEEVANI
· Songs Available On AUDIO APP ·



Shree Kundkund-Kahan Parmarthik Trust

302, Krishna Kunj, V. L. Mehta Marg, Vile Parle (West)
Mumbai - 400 056 INDIA

Tel. : +91 22 2613 0820 / 2610 4912

✉ info@vitragvani.com 🌐 www.vitragvani.com [f/vitragvaneer](https://www.facebook.com/vitragvaneer) [y/c/vitragvanii](https://www.youtube.com/c/vitragvanii)